प्रातः क्लास 19-12-68 ओमशान्ति पितश्री : शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों से रूहानी बाप बैठपूछते हैं यहां जो तुम बैठे हो किसकी याद में बैठे हो? (बाप शिक्षक सद्गुरु की) सभी इन तीनों की याद में बैठे हो। हरेक अपने से पूछे। यह सिर्फ अभी यहां बैठे याद है या चलते-फिरते याद रहती है। क्योंकि यह है वन्डरफुल बात। और कोई आत्मा को कब ऐसे नहीं कहा जाता। भल यह ल0ना0 विश्व के मालिक हैं परन्तु उनकी आत्मा को कब ऐसे नहीं कहेंगे कि यह बाप भी है टीचर भी है सद्गुरु भी है। बल्कि जो भी सारी दुनिया में जीवात्मायें हैं कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कहेंगे। तुम बच्चे ही ऐसे याद करते हो। अन्दर में आता है यह बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है सद्गुरु भी है। सो भी सुप्रीम। तीनों को याद करते हो या एक को। भल वह है एक ही परन्तु तीनों गुणों से याद करते हो? शिव बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह एक्टा आर्डीनरी कहा जाता है। जब बैठते हो चलते-फिरते हो तो यह याद रहना चाहिए। बाप पूछते हैं ऐसे याद करते हो कि यह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। ऐसा दूसरा कोई भी देहधारी हो नहीं सकता। देहधारी नम्बरवन है। कृष्ण, उनको भी बाप टीचर गुरु कह नहीं सकते। यह बिल्कुल वन्डर-फुल बात है। तो सच्च2 बताना चाहिए। तीनों रूप में याद करते हो। भोजन पर बैठते हो सिर्फ शिव बाबा को याद करते हो या तीनों रूपों में याद आते हैं? और तो कोई भी आत्मा को ऐसे कह नहीं सकते। यह है वन्डरफुल बात। अजीब महिमा है बाप की। तो बाप को याद भी ऐसे करना है तो बुद्धि एकदम उस तरफ चली जावेगी जो जैसा वन्डर-फुल है। बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं फिर सारे चक्र का भी नालेज देते हैं। ऐसे यह युग है। इतने2 वर्ष की है। जो फिरते रहते हैं। यह पढ़ाई भी वह रचयिता बाप ही कराते हैं। तो उनको याद करने में मदद बहुत होगी। बाप टीचर गुरु वह एक ही है इतनी ऊंच आत्मा और कोई हो नहीं सकती। परन्तु माया ऐसी है जो बाप की याद भी भूला देती है। तो टीचर गुरु को भी भूल जाते हैं। यह हरेक को अपने दिल से पूछना है। बाबा हमको ऐसा विश्व का मालिक बनाते हैं। बेहद के बाप का वरसा जरूर बेहद का ही होगा। साथ 2 यह महिमा भी बुद्धि में आनी चाहिए। चलते-फिरते तीनों ही याद आनी चाहिए। यह एक ऐसी आत्मा की तीनों मूर्तियां इकट्ठी है। इसलिये उनको सुप्रीम कहा जाता है।

अभी कानफ्रेन्स आदि बुलाते हैं, कहते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो। वह तो हो रही है। आकर सभी मान कर रहे हैं। तुमको बाप का आक्युपेशन तो सिध कर बताना है। बाप की आक्युपेशन और कृष्ण की आक्युपेशन में बहुत फर्क है। और तो सभी का नाम शरीर का ही लिया जाता है। उनकी आत्मा का नाम गाया जाता है। वह आत्मा बाप भी है टीचर भी है। क्योंकि उन आत्मा में फुल नालेज है। परन्तु वह दे कैसे। शरीर द्वारा ही देंगे ना। जब देते हैं तब तो महिमा गाई जाती है। अभी शिवजयन्ति पर बच्चे कानफ्रेन्स करते हैं सभी धर्म के नेताओं को मंगाते हैं। तुमको समझाना है ईश्वर सर्वव्यापी तो है नहीं। अगर सभी में ईश्वर है तो क्या हरेक आत्मा भगवान बाप भी है-टीचर भी है गुरु भी है? बताओ सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेज है? यह तो कोई भी सुना न सके। तुम बच्चों के अन्दर में आना चाहिए ऊंच ते ऊंच बाप की कितनी महिमा है। सारे विश्व को पावन बनाने वाला है। प्रकृति भी पावन बन जाती है। कानफ्रेन्स में पहले 2 तो तुम यह पूछेंगे गीता का भगवान कौन? सतयुगी आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने वाला कौन? अगर कृष्ण के लिये कहेंगे तो बाप को गुम कर देंगे। या तो फिर कह देते हैं वह नाम रूप से न्यारा है। जैसे कि है ही नहीं। तो बाप विगर आरफन ठहरे ना। बेहद के बाप को ही नहीं जानते हैं। कितना तंग करते हैं एक दो पर कार कटारी चलाकर कितना तंग करते हैं। एक दो को काटते हैं। म तक्षक सर्प भी सबसे बड़ा होता है। इस समय हरेक मनुष्य तक्षक सर्प हैं। सन्यासी भी कहते हैं स्त्री सर्पनी है। तो जरूर खुद भी सर्प ठहरे ना। तो यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में चलनी चाहिए। कान्ट्रास्ट करना है। यह ल0ना0 भगवति भगवान थे। इन्हों की भी वंशावली

हुई है ना। तो जरूर सभी ऐसे गाड गाडेस होनी चाहिए। तो तुम सभी धर्म वालों को संगाते हो, जो अच्छी रीत पढ़े लिखे हैं, बाप का परिचयदे सके उनको ही बुलाना है। तुम लिख सकते हो जो आकर रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त की परिचय देवे उनके लिये हम आने जाने का सभी प्रबन्ध करेंगे। अगर रचयिता और रचना का परिचय दिया तो। यह तो जानते हो कोई भी ज्ञान दे नहीं सकते हैं। भल कोई विलायत से आवे- रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय दिया तो हम खर्चा देंगे। ऐसी बड एडवरटाईज और कोई तो कर न सके। तुम तो बहादूर हो ना। महावीर महावीरनियां हो। तुम जानते हो इन्हों ने विश्व की बादशाही कैसे ली। कौन सी बहादूरी की। बुधि में यह सभी बातें आनी चाहिए। कितना तुम ऊंच कार्य कर रहे हो। सारे विश्व को पावन बना रहे हो। तो बाप को याद करना है। सिर्फ यह नहीं कि शिव बाबा याद है। परन्तु उनकी महिमा भी बतानी है। यह है महिमा निराकार की। परन्तु निराकार अपना परिचय कैसे देंगे। जरूर रचना के आदि मध्य अन्त का नालेजदेने लिये मुख चाहिए ना। मुख की कितनी महिमा है। मनुष्य गऊ मुख पर जाने कितना धक्का खाते हैं। क्या2 बातें बना दी है। तीर धारा गंगा निकल आई। गंगा को समझते हैं पतित-पावन। अभी पानी कैसे पतित-पावन हो सकता। पतित-पावन तो एक बाप ही है। तो बाप तुम बच्चों को कितना सिखलाते रहते हैं। इतना बुधि में आता नहीं है कि क्या2 आर्टीकिल देवें। बाबा तो कहते हैं यह करो। कौन आकर रचयिता और चना के आदि मध्य अन्त का परिचय देंगे। साधु सन्यासी आदि भी यह नहीं जानते हैं। ऋषि मुनि सभी कहते थे नेती2 हम नहीं जानते हैं। गोया नास्तिक थे। अभी देखो कोई आस्तिक निकलता है। अभी तुम बच्चे भी नास्तिक से आस्तिक बन रहे हो। तुम बेहद के बाप को जानते हो जो तुमको इतना ऊंच बनाते हैं। पुकारते भी हैं ओ गाड फादर लिबरेट करो। बाप समझाते हैं यह समय रावण का सारे विश्व पर राज्य है। सभी भ्रष्टाचारी हैं। फिर श्रेष्ठाचारी भी होंगे ना। तुम बच्चों की बुधि में है पहले2 पवित्र दुनिया थी। बाप अपवित्र दुनिया वेश्यालय थोड़ेही रचेंगे। बाप तो आकर पावन दुनिया स्थापन करते हैं। जिसको शिवालय कहा जाता है। शिव बाबा शिवालाय बनावेंगे। वह कैसे बनाते हैं सो भी तुम जानते हो महाप्रलय जलप्रलय आदि तो होती नहीं। शास्त्रों में तो क्या2 बैठ लिखा है। बाकी पांच पाण्डव बचे जो हिमसलय में जाकर गल गये। फिर रिजल्ट क्या हुई? रिजल्ट का कोई को भी पता नहीं है। यह सभी बातें बाप बैठसमझाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो वह बाप बाप भी है, टीचर भी है सद्गुरु भी है। तुम्हारे बिकव= बिगर कोई समझ न सके। बड़े2 महात्मा लोग जो भी पुजारी हैं। वहां तो मंदिर आदि होते ही नहीं। यह देवतायें होकर गये हैं जिनकी यादगार मंदिर यहां है। यह सभी ड्रामा में नुंध है। सेकण्ड व सेकण्ड नई बात होती रहती है। चक्र फिरता रहता है। अभी बाप बच्चों को डायरेक्शन तो बहुत अच्छी देते हैं बहुत देहअभिमानी महारथी है जो समझते हैं हम तो सभीकुछ जान गये हैं। मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। कदर ही नहीं है। बाबा ताकिद करते हैं कोई कोई मुरली बहुत अच्छी चलती है। मिस न करनी चाहिए। 10-15दिन मुरलियां जो मिस होती है वह बैठ पढ़नी चाहिए। यह भी बाप समझाते रहते हैं ऐसे2 चैलेंज दो। यह रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त कानालेज कोई आकर देवे तो तो हम उनको खर्चा आदि सभी देंगे। ऐसे चैलेज तो जो जानते हैं वह देंगे ना। टीचर जो जानता है तब तो पूछते हैं ना। बिगर जानने से पूछेंगे कैसे। कोई2 बच्चे मुरली की भी डौन्ट केयर करते हैं। बस हमारा तो शिव बाबा से ही कनेक्शन है। परन्तु शिव बाबा जो सुनाते हैं वह भी सुनना है ना न सिर्फ उनको याद ही करना है। बाप कैसी अच्छी2 बातें सुनाते हैं। परन्तु माया बिल्कुल ही भगुर कर देती है। कहावत भी है ना कोई लधे हैड गिरे .... बहुत हैं जो मुरली पढ़ते ही नहीं। अपनी ही शास्त्रों की तिक2 करते रहेंगे। मुरली पर ख्याल भी नहीं करते। मुरली में तो नई2 बातें निकलती है ना। वह तो भल गीता आदि शास्त्रों से बातें निकालो। आटे में लुन कर के होगा। वह भी जरूर गीता में है। और शास्त्रों में तो कुछ भी नहीं है। तो यह सभी बातें समझने की हैं। जब बाप की याद में बैठते हो तो यह भी याद करना है कि वह बाप

१६-१२-६८

टीचर भी है सद्गुरु भी है। नहीं तो पढ़ेंगे कहां से। यह कानफ्रेन्स होगी बहुत अच्छी। फिर भी पत्थर बुधि तो है ना। बहुत थोड़े आवेंगे। बाबा के पास तो आ न सके। बाप ने तो बच्चों को सभी समझा दिया है। बच्चे ही बाबा का शो करेंगे। सन शोज फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं ना। फिर बच्चों का काम है शो करना। फिर बाप थोड़ेही फिरेंगे। कहेंगे आज फलाने जगह जाओ आज यहां जाओ। इनको थोड़े ही कोई आर्डर करने वाला होगा। तो यह निमंत्रण आदि अखबारों में भी पड़ेंगे। इस समय सारी दुनिया है नास्तिक। बाप ही आकर आस्तिक बनाते हैं। इस समय दुनिया है वर्थ नाट अपेनी। अमेरिका पास भल कितना भी धन-दौलत है परन्तु वर्थ नाट अपेनी। यह तो सभी खत्म हो जाना है ना। सारी दुनिया में तुम वर्थ बन रहे हो। वहां कोई कंगाल होगा ही नहीं। तुम बच्चों को सदैव इस ज्ञान को सुमिरण कर हर्षित रहना चाहिए। इसके लिये ही गायन है अति ईन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपियों से पूछो। संगमयुग की ही बात है। संगमयुग को कोई भी जानते नहीं। अभी देखने आते हैं वा नहीं। विहंगमार्ग की सर्विस करने से शायद महिमा निकले। बाप तो कहते हैं ऐसी हालत में महिमा मुश्किल निकेगी। गायन है अहो प्रभु तेरी लीला ... यह कोई भी नहीं जानते थे कि आप बाप भी है टीचर भी है गुरु भी हैं। अभी फादर तो बच्चों को सिखलाते रहते हैं, बच्चों को भी नशा स्थाई रहना चाहिए। अभी तो नशा झट सोडा वाटर हो जाता है। सोडा भी ऐसे होते हैं। थोड़ा टाईम रखने से जैसे खारा पानी हो जाते हैं। ऐसा तो न होना चाहिए। किसको ऐसा समझाओ जो वह भी वन्डर खावे। अच्छा2 कहते भी हैं परन्तु फिर टाईम निकल जाई, जीवन बनावे वह बड़ा मुश्किल है। बाबा कोई मना नहीं करते कि धंधा आदि न करो। यह तो टीचर है ना। और यह है अनकामन पढ़ाई। कोई भी मनुष्य नहीं पढ़ा सकते। बाप ही भाग्यशाली रथ पर आकर पढ़ाते हैं। बाप ने समझाया है यह तुम्हारा तख्त है। जिसपर अकालमूर्त आत्मा आकर बैठती है। उनको यह पार्ट मिला हुआ है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। अभी तुम समझते हो यह तो रीयल बात है। बाकी वह सभी हैं आर्टीफिशियल बातें। यह अच्छी रीत धारण कर गांठ बांध लो। तो हाथ लगने से याद पड़ेगा। कोई तो गांठ क्यों बांधी है यह भी भूल जाते हैं। तुमको तो यह पक्का याद करना है। बाप की याद साथ नालेज भी चाहिए। भक्ति भी है तो जोड़न भक्ति भी है। बहुत मीठे2 बच्चे बनो। बाबा अन्दर में समझते हैं कल्प2 यह बच्चे पढ़ते रहते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही परसा लेंगे। फिर भी पढ़ाने लिये तो टीचर पुरुषार्थ कराते हैं। तुम घड़ी2 भूलजाते हो इसलिये याद कराया जाता है। शिव बाबा को याद करो। वह बाप भी है .... छोटे बच्चे ऐसे याद नहीं करेंगे। कृष्ण के लिये थोड़ेही कहेंगे वह बाप भी है ... सतयुग का प्रिन्स श्रीकृष्ण। वह फिर गुरु कैसे बनेगा। गुरु चाहिए दुर्गति में। गायन भी है बाप आकर सभी की सद्गति करते हैं। कृष्ण को सांवरा भी ऐसा बना देते हैं जैसे काला कोयला। बाप कहते हैं इस समय सभी काम चिता पर बैठ काले कोयले बन पड़े हैं तब सांवरा कहा जाता है। कितनी गुह्य बातें समझने की है। गीता तो सभी पढ़ते हैं अपना2 अर्थ बैठ करते हैं। वास्तव में तो सन्यासियों को वेद शास्त्र उपनिषद आदि पढ़ने का हक नहीं। वह है प्रवृति मार्ग वालों के लिये। यज्ञ तप दान-पुण्य आदि तुम ही करते आये हो। सन्यासियों की तो बात ही नहीं। वह तो आते ही हैं पीछे। पीछे आने वाले को शास्त्र आदि नहीं पढ़नी है। क्रिश्चन लोग ऐसे पक्के होते हैं जो कब दूसरा कोई का शास्त्र, किताब आदि हाथ में भी नहीं लेते। भारत ही है जो सभी शास्त्रों को मानता है। सभी के चित्र रखते रहेंगे। तो उनको क्या कहेंगे। व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। कृष्ण की भक्ति छोड़ राम की तो वह भी व्यभिचारी ठहरे ना। आजकल मंदिरों में भी बहुत चित्र रख देते हैं। बाप समझाते हैं वह है व्यभिचारी भक्ति। अव्यभिचारी भक्ति एक ही शिव की होती है। ज्ञान भी एक शिव से मिलता है। यह ज्ञान ही डिफरेन्ट है। इनको कहा जाता है स्प्री0नालेज। बाप कैसे आते हैं यह भी तुम जानते हो। तुमको ब्रह्मा के लिये कहते हैं। बोलो यह तो झाड़ के अन्त में खड़ा है। झाड़ का विनाश होता है तो फिर जाकर यह कृष्ण बनते हैं। या ल0ना0 बनते हैं। बात एक ही है। कृष्ण के लिये कहते हैं गीता सुनाई ना0 को ज्ञान नहीं था कृष्ण ल0ना0 छोटेपन में कान थे कुछ भी जानते नहीं। तुम जानते हो। यही राधे कृष्ण स्वयंवर बाद ल0ना0 बनते हैं। अच्छा। ओम्।